शिवरात्रि

शिवरात्रि का पुनीत पर्व प्रतिवर्ष मनुष्य आत्मायें मनाती चली आती है परन्तु यह शुभ दिवस किसकी याद में मनाया जाता है तथा शिव का वास्तविक स्वरूप क्या है इस बात की यथार्थता से प्रायः मनुष्य अनभिज्ञ है शिव का अर्थ है कल्याणकारी अतः शिव कोई साधारण मनुष्य नही वह कोई गर्भ से पैदा हुए व्यक्ति नही यदि ऐसा होता तो उनके माता-पिता का वर्णन अवश्य होता परन्तु ऐसा वर्णन तो कही है नही "शिव" सूक्ष्म शरीरधारी देवता भी नही है भक्तजन भक्ति करते हुए ब्रह्मादेवताय नमः विष्णु देवताय नमः कहते सुने जाते हैं वे शिव देवताय नमः नही कहते बल्कि शिवाय नमः और शिवपरमात्माय नमः कहते है। अतः शिव मनुष्यों एवं देवों श्रेणी से उच्च कोई परमपूज्य है, शिव जैसा कि अर्थ से सिद्ध है केवल एक परमपिता परमात्मा का ही दिव्य नाम हो सकता है क्योकि कल्याणकारी तो एक सर्व सम्मत परमपिता परमात्मा ही है उनके सिवाय बाकी सभी आत्मायें तो कल्याण की इच्छा रखने वाली है

शिव का स्वरूप तो ज्योर्तिलिंगम अंगुष्ठा सद्श्य वह भी इसी बात का ध्योतक है कि यह तो निराकार अव्यक्तमूर्त ज्योति रूप वाले स्वयं भगवान की प्रतिमा है। जो हम सालीग्राम सदृश्य रूप वाली अव्यक्त आत्माओं के परमपिता है।

शिव जन्म-मरण से रहित है लेकिन उनका दिव्य जन्म अथवा अवतरण भी होता है इसी याद में शिवरात्रि नाम से इनका दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को शिव जयन्ति न कहकर शिवरात्रि कहा जाता है क्योंकि इस मनुष्य सृष्टि में परमात्मा शिव अवतरण तभी होता है जब कि विकारों अथवा अज्ञान की महारात्रि होती है इस अज्ञान अंधकार को अथवा विकारों की कालिमा को ही गीता में धर्मग्लानि कहा है। ऐसे रात्रि अथवा धर्मग्लानि के समय ही परमात्मा शिव ब्रह्मा के साधारण तन में अवतरित होकर गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग सीखाकर पतित आत्माओं को पावन तथा सुखी बनाते हैं अतः वास्तव में निराकार अव्यक्तमूर्त परमपिता परमात्मा शिव गीता के भगवान हैं, तथा आदि सनातन देवी-देवता धर्म के स्थापक है और स्वर्ग के स्वराज्य के रचयिता है, इन्हों के पास अमृत रूपी गीता ज्ञान से सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण र्निविकारी राजकुमार श्री कृष्ण का जन्म हुआ।

परमपिता परमात्मा शिव ही देह से न्यारे हैं हम मनुष्यात्मायें जब अपने आत्मिक धर्म को भूलकर देह के धर्मो में फंस कर दुखी और अशान्त हो जाती है तब एक परमात्मा शिव ही अपने सत्य पहचान देकर हमको वास्तविक योग सिखलाते हैं केवल शिव परमात्मा की याद में रहने से मनुष्यात्माओं के जन्म-जन्मान्तर के विकर्म दग्ध हो जाते हैं, अतः अब-जब कि चारों ओर ही दुख अशानि तथा तमोप्रधान का राज्य है हमें अपनी बुद्धि को सतोप्रधान, शुद्ध तथा दिव्य बनाने के लिए अपना आध्यात्मिक नाम भगवान शिव से जोड़कर उन्ही से अपना बुद्धियोग लगाना चाहिए अपने आपको भी देह के धर्मो से निकालकर स्वयं को इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अभिनय करने के लिए उपस्थित होने वाला एक अभिनेता समझते हुए अनाशक्त रहना चाहिए इस प्रकार का आचरण करने से ही हम वर्तमान तमोप्रधान रात्रि के समय में हम यथार्थरिती से शिव रात्रि मना सकेंगे और इस प्रकार मनाने में ही हम आत्माओं का कल्याण समाया हुआ है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचस

www.bkvarta.com